सम्बद्धता के शिक्षणशास्त्र का विचार | एक रणनीति

जोयिता बनर्जी

एक रणनीति के रूप में 'सम्बद्धता स्थापित करने' का उद्देश्य

लेख के प्रारम्भ में ही मैं यह कहना चाहूँगी कि इस लेख का उद्देश्य है कि सम्बद्धता स्थापित करने के बारे में संवाद की शुरुआत हो सके और औपचारिक अधिगम के क्षेत्र में सम्बद्धता का शिक्षणशास्त्र (Pedagogy of Connect) विकसित हो सके। ऐसे समय में तो यह और भी आवश्यक है जब पूरी दुनिया एक महामारी, नस्लवाद और जलवायु संकट के कारण खण्डित है। हमारा अधिगम पूरी तरह से बन्द या सीमित स्थान में होता है जो न केवल अधिगम की मशीन की तरह काम करता है बल्कि निरीक्षण, पदानुक्रम तथा पुरस्कृत करने के लिए भी मशीन के रूप में कार्य करता है (फूको, 1991)। यह बुरी तरह से विफल रहा है और 'मानसिक चिन्ता और अस्तित्वगत अनिश्चितता' का निर्माण हुआ है (पाठक, 2020)।

ऐसा क्यों है? इसका कारण यह है कि हमारा असम्बद्ध अधिगम, सीखने के ऐसे अवसरों को पैदा नहीं करता जिसकी जड़ें शिक्षार्थियों, विशेष रूप से वंचित शिक्षार्थियों की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक वास्तविकता में जमी हों। विभिन्न शैक्षिक नीतियों और योजनाओं के कारण माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में अब पहली पीढ़ी के शिक्षार्थियों (एफजीएल) की संख्या काफ़ी अधिक हो गई है। ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों में पहली पीढ़ी के शिक्षार्थी 'जो कई सामाजिक श्रेणियों से सम्बन्धित हैं' (बनर्जी, 2017) - वे औपचारिक, 'सीमित शैक्षिक स्थानों' में परायापन-सा महसूस करते हैं, क्योंकि 'जिन तौर-तरीक़ों से यह विद्यार्थी प्रेरित होते हैं, आत्म-प्रभावशाली बनते हैं, भाषा सीखने की मान्यताएँ निर्मित करते हैं और परसंस्कृति ग्रहण करते हैं, शिक्षणशास्त्र उन तरीक़ों की उपेक्षा करता है (जमशीदी, 2013)। इसलिए शिक्षा के सभी हितधारकों की यह ज़िम्मेदारी है कि वे उन वंचित शिक्षार्थियों के लिए अधिगम के ऐसे स्थान बनाएँ जो उनकी 'न्यायसंगत भागीदारी' सुनिश्चित करें भले ही उनकी पीढ़ीगत स्थिति कुछ भी हो।

मैंने अन्यत्र (बनर्जी, 2018) उन चुनौतियों की चर्चा की है जिनका सामना पहली पीढ़ी के शिक्षार्थी स्कूल में करते हैं और किस प्रकार स्कूली प्रक्रियाएँ उनके अलगाव में योगदान करती हैं। अधिगम के औपचारिक सीमित स्थान वास्तव में ऐसे 'सामाजिक स्थान हैं जहाँ संस्कृतियाँ मिलती हैं, टकराती हैं; और एक-दूसरे से जूझती हैं, और ऐसा अक्सर अत्यधिक विषम शक्ति-सम्बन्धों के सन्दर्भों में होता है... '(प्रेट, पृ. 34)।

'बैंकिंग मॉडल' (फ्रेरे,1970) के आधार पर प्रदान किए जाने वाले, उपेक्षा के शिक्षणशास्त्र के भीतर भी आलोचनात्मक जाँच पसन्द करने वाली, भाषा की सुगमकर्ता और शोधकर्ता होने के नाते, मेरे इस लेख का वैचारिक ढाँचा भी 'आलोचनात्मक चेतना' (Critical Consciousness) पर टिका हुआ है। यह लेख उन शैक्षणिक रणनीतियों को विकसित करने का प्रयास करता है जिन्हें 'चौथी दीवार को तोड़ने के लिए' (ब्रेख्त की नाट्य तकनीक) काम में लाया जा सकता है और सभी शिक्षार्थियों के बीच 'आलोचनात्मक चेतना' पैदा करने का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

उपेक्षा की पहचान

भाषा की सुगमकर्ता, विशेष रूप से द्वितीय भाषा की सुगमकर्ता के रूप में मुझे इस बात का ध्यान रखना होगा कि शैक्षिक नीतियों, योजनाओं और विशेषाधिकार प्राप्त लोगों की माँगों के अनुसार भाषा शिक्षा का लक्ष्य है 'कक्षा स्तर की दक्षताओं' को विकसित करना और शिक्षार्थियों का परिचय नए सांस्कृतिक मानदण्डों से करवाना। पहली पीढ़ी के शिक्षार्थियों के लिए द्वितीय भाषा का अधिग्रहण ऐसा ही है जैसा कि किसी दूसरी संस्कृति को सीखना (ब्राउन, 1986), उनके लिए द्वितीय भाषा की कक्षाएँ कष्टदायी अनुभव बन जाती हैं क्योंकि 'स्कूल की औपचारिक, विस्तृत, सन्दर्भ-स्वतंत्र भाषा, घर में बातचीत की सीमित, अन्तरंग संहिता से अलग है'(बर्नस्टीन, 1971)। इसके अलावा लेखन से पहले व्याकरण सीखने का बोझ, एक अनजान भाषा के साथ सार्थक रूप से जुड़ने की सम्भावना को खत्म कर देता है। इसलिए मेरा सुझाव है कि सम्बद्धता के शिक्षणशास्त्र को शुरू करने का पहला क़दम है- भाषा सीखने के शिक्षणशास्त्रीय दृष्टिकोण में छिपे हुए, उपेक्षित क्षेत्रों की पहचान की जाए, जो एक ऐसी रणनीति की आधारशिला है जो भाषा सीखने की पूरी प्रक्रिया में आमूल परिवर्तन कर सकती है और आलोचनात्मक चेतना के निर्माण में सहायता कर सकती है।

एक स्वतंत्र शोधकर्ता और सरकारी सहायता प्राप्त ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय में भाषा की सुगमकर्ता के रूप में मैंने

पाया है कि हमारी शिक्षा प्रणाली, विकास और असमानता पर केन्द्रित एक आर्थिक अनिवार्यता में सहयोजित रहती है। अलगाव की प्रक्रिया यहीं से शुरू होती है। सभी शिक्षार्थियों के बीच 'मौन की संस्कृति' है, जो पहली पीढ़ी के शिक्षार्थियों में और भी अधिक है।

द्वितीय भाषा की सुगमकर्ता होने के नाते मेरे लिए यह पहचानना ज़रूरी है कि कैसे मेरे शिक्षणशास्त्रीय दृष्टिकोण, महज़ 'भाषाई शक्ति के प्रयोग के साधन' माने जाते हैं' (फिलिप्सन, 1992) और एकभाषी दुनिया के प्रमुख कथ्य की स्थापना करते हैं। इससे, पहली पीढ़ी के शिक्षार्थियों को भाषा सीखने सम्बन्धी अपनी मान्यताओं पर सवाल उठाना शुरू करने में मदद मिलेगी। पहली पीढ़ी के शिक्षार्थियों को इस बात के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए कि वे भाषा सीखने की अपनी मान्यताओं पर, और यह मान्यताएँ अपनी मातृभाषा के प्रति उनके दृष्टिकोण को कैसे प्रभावित करती हैं इस पर आलोचनात्मक दृष्टि डालें। इससे उन्हें विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग की भाषा में छिपी हुई उपेक्षा, और यह उपेक्षा किस प्रकार से स्कूलों द्वारा अनुसरण की जाने वाली शैक्षणिक रणनीतियों में अन्तर्निहित है, इस पर सवाल उठाने में मदद मिलेगी है। जब एक बार उपेक्षा की पहचान हो जाती है तो बाक़ी क़दम ख़ुद-ब-ख़ुद सही पड़ने लगते हैं।

कक्षा व्यवस्था

मुझे लगता है कि सम्बद्ध अधिगम को बनाने में कक्षा-व्यवस्था की प्रमुख भूमिका है। यह इस बात के संरचनात्मक पहलुओं पर ध्यान देता है कि शिक्षक अपनी कक्षा को कैसे संरचित करते हैं (स्ट्रेंज, और अन्य)। कक्षा की वर्तमान भौतिक व्यवस्था में शिक्षार्थियों को पंक्तियों में बैठाया जाता है और सुगमकर्ता उनके सामने, मानो उनके ख़िलाफ़, खड़े होते हैं। यह व्यवस्था एक ऐसी 'एकल प्रधान टेबल' का निर्माण करती है जिसमें मास्टर की 'सूक्ष्म "वर्गीकृत" करने वाली दृष्टि' के तहत अलग-अलग लोगों की अलग-अलग प्रविष्टियाँ होती हैं (फूको, 1991)। पहली पीढ़ी के शिक्षार्थी जो पहली बार इस प्रकार की व्यवस्था का सामना करते हैं, इस प्रक्रिया में अन्यता की भावना महसूस करते हैं जो कक्षा की प्रक्रियाओं के साथ सार्थक सम्बद्धता में बाधा डालती है। इसलिए वे कक्षा-स्तरीय दक्षताओं को प्राप्त करने में पीछे रह जाते हैं और उन सुगमकर्ताओं और अन्य लोगों के निकट आने से झिझकते हैं जो कक्षा में औपचारिक अधिगम की पृष्ठभूमि से आते हैं (बनर्जी, 2013)। इसलिए सुगमकर्ताओं को चाहिए कि इस प्रकार की व्यवस्थाओं को बदलें और बच्चों को गोल घेरे में या अर्ध-गोल घेरे में बिठाएँ और स्वयं घेरे के बीच में बैठें। बड़ी कक्षाओं में ऐसा करना एक चुनौती है। अतः उन कक्षाओं में बैठने की व्यवस्था को प्रतिदिन बारी-बारी से बदलना चाहिए।

शिक्षार्थियों को लुभाना

सीमित शैक्षिक स्थान जहाँ मैं अपनी भाषा की कक्षाएँ लेती हूँ, वे शैक्षणिक मशीनें हैं जो स्वास्थ्य, योग्यता, राजनीति और नैतिकता की अनिवार्यताओं की पुनःपुष्टि करती हैं (फूको, 1991), और वास्तविक जीवन की सभी पुष्टि-प्रक्रियाओं की उपेक्षा करती हैं। मैं जो शिक्षा प्रदान करती हूँ वह, 'आधुनिकता के आत्म-बोध-प्रकृति पर मानवीय वर्चस्व की उसकी धारणा, तकनीकी-विज्ञान की जानकारी के माध्यम से होने वाली असीमित 'प्रगति' में आत्म-मुग्ध विश्वास और पूर्वानुमान, नियंत्रण और व्यवस्था स्थापित करने की इसकी शक्ति, के साथ गहराई से जुड़ी हुई है' (पाठक, 2020)।

प्रथम पीढ़ी के शिक्षार्थी, जो माध्यमिक शिक्षा में एक़दम नए हैं, सामाजिक पदानुक्रम के औपचारिक विकास के लिए तथाकथित 'आधुनिक शिक्षा' की संहिता को समझने की कोशिश कर रहे हैं, उन्हें इस तथ्य की पुष्टि की आवश्यकता है कि वे ख़ुद भी ज्ञान के उस विशाल संग्रह से समृद्ध हैं जिसे उन्होंने अपने अनुभवात्मक जीवन से पहले ही हासिल कर लिया है। उन्हें इस बात के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए कि वे वर्तमान दुनिया में 'आधुनिकता को भुलाने या अनलर्न' (unlearn) करने में सुगमकर्ता और अन्य लोगों की मदद करें, क्योंकि आज के समय में शिक्षक एवं एजुकेटर्स 'जीवन जीने की सूक्ष्म कला' के साथ बच्चों का सार्थक जुड़ाव स्थापित करवा पाने में असफल रहे हैं (पाठक, 2020)।

भाषा की कक्षा में तुलनात्मक रूप से कम अनुकूलित मस्तिष्क (कंडीशंड माइंड्स) को कक्षा में लाने की प्रक्रिया ऐसी होनी चाहिए जो स्थानीय साहित्य और गीतों के माध्यम से उनकी गरिमा को पुष्ट करने के लिए प्रोत्साहन तथा अवसर प्रदान करे। शिक्षार्थी, चाहे उनकी पीढ़ीगत स्थिति कुछ भी हो, प्रकृति की बर्बादी के परिणामों को समझते हैं और मानवजनित जलवायु संकट में अपनी भूमिकाओं की आलोचनात्मक जाँच (critical enquiry) करते हैं। कक्षाओं में एक संवादात्मक रिश्ते को बढ़ावा देने और शिक्षक के साथ बातचीत में महत्त्वपूर्ण सह-अन्वेषक बनकर सम्बद्धता के एक नए अभ्यास से शिक्षार्थियों को परिचित कराने के लिए कक्षाओं के भीतर साप्ताहिक रूप से शिक्षार्थियों के नेतृत्व वाले और उन्हीं के द्वारा चुने गए विषयों पर सेमिनार का आयोजन करना चाहिए।

आकलन : प्रक्रिया का अन्तिम चरण

बहुविकल्पी प्रश्नों की मदद से उद्देश्यपूर्ण आकलन की वर्तमान प्रक्रिया से शिक्षार्थियों में रूढ़िवादिता या कट्टरता का विकास होता है। वे केवल एक सही उत्तर की अवधारणा को इनडॉक्ट्रीनेट (indoctrinate) कर लेते हैं। इसके अलावा युवा मस्तिष्क पहले से ही डिग्री-नौकरी के गठजोड़ पर पूर्ण

विश्वास रखने के लिए अनुकूलित(conditioned) होता है। जितनी ऊँची डिग्री, उतना बेहतर काम - इसके चलते आकलन की प्रक्रिया का कायापलट करना एक चुनौती बन जाता है। इसलिए शिक्षार्थियों को, विशेष रूप से पहली पीढ़ी के शिक्षार्थियों को, समीक्षात्मक चिन्तन से परिचित कराने के लिए, परियोजनाओं को उनके जीवन और भाषाओं के प्रत्यक्ष अनुभवों पर आधारित होना चाहिए। हालाँकि शुरुआत में इस रणनीति का पालन करना कठिन होगा, लेकिन एक बार अभ्यास हो जाए तो अपेक्षित परिणाम प्राप्त होंगे - आलोचनात्मक चेतना का निर्माण होगा।

References

Banerjee, J. (2018). The Excluded Variable in Quality Learning: Generational Status, A Case Study of First-Generation Learners Enrolled in Rural Schools, Bankura

Barnstein, B. (1971). Class, codes and Control, Volume III, Towards A Theory of Educational Transmission

Brown, H.D. (1986). Culture Bound: Bridging the Culture Gap in Language Teaching, Cambridge Language Teaching Library

Foucault, M. (1991). Discipline and Punish, Penguin books

Garavan, M. (2010). Opening up Paulo Freire's Pedagogy of the Oppressed, ResearchGate, Doi10.2307/30023905

Jamshidi , K.(2013). Generational Status: An Ignored Variable In Language Learning, The Journal of ASIA TEFL, Vol: 10, No.2, pp-35-62, Summer 2013

Pathak, A. (2020). Mainstream, VOL. LVIII No.23

Pratt, M. L. (1991). Arts of the contact zone. Profession, 1991, 33–40. (Originally a keynote address at the Responsibilities for Literacy Conference, Pittsburgh, PA, September,1990.)



जोयिता बनर्जी पिछले 18 वर्षों से पश्चिम बंगाल के बांकुरा के निकुंजपुर हाई स्कूल में ईएसएल शिक्षिका के रूप में कार्य कर रही हैं। इससे पहले वे अरलडीही हाई स्कूल में सहायक शिक्षिका और बांकुरा सम्मिलनी कॉलेज में अतिथि व्याख्याता के रूप में कार्य कर चुकी हैं। वे एक स्वतंत्र शोधकर्ता के रूप में कार्य करती हैं और विविध विषयों पर उनके शोधपत्र प्रकाशित हुए हैं। जोयिता को CRY से राष्ट्रीय बाल अधिकार अनुसंधान फैलोशिप (2012) प्राप्त है। उनसे joyeeta007@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल

बीज के अंकुरण की प्रक्रिया को देखना, अपने आसपास के क्षेत्र के पेड़ों को समझना आदि कुछ ऐसे विषय हैं जो जीवन की वास्तविक विषय-सामग्री का निर्माण करते हैं और जिन्हें पारम्परिक शिक्षकों को भी अपनी कक्षा में लाना चाहिए; ज़रूरी नहीं कि बीएड की डिग्री प्राप्त शिक्षक ही ऐसा करें। हमारे स्कूलों का उद्देश्य भी यही वास्तविक अधिगम है जो बच्चे को भी आश्वस्त करता है और यह तय करता है कि उसे यह स्थान अपने लिए ठीक लगता है या नहीं।

- शिवानी तनेजा, 'प्रत्येक बच्चे को स्कूल में लाना', पेज 83